तुलसी की सफल खेती

गोवर्धन लाल कुम्हार*, देवी लाल धाकड, शिवम मौर्य**, रायपाटि कार्तिक***** और **राम निवास******

प्राचीन समय से ही तुलसी एक पवित्र पौधा है जिसे हर घर में लगाकर पूजा होती है। तुलसी का आयुर्वेद में बहुत बड़ा स्थान है। तुलसी से बहुत सारे रोगों का उपचार किया जाता है। इसके प्रतिदिन सेवन करने से कई प्रकार के रोगों से राहत मिलती है। वर्तमान में इसकी खेती औषधीय रूप में की जाने लगा है। यह पौधा पूरे भारत में पाया जाता है अगर किसान चाहें तो इसकी खेती करके भारी मुनाफ़ा कमा सकते हैं। तुलसी की सौंदर्य प्रसाधनों के साथ औषधीय बनाने वाली सभी कंपनियों को जरूरत होती है। सौंदर्य प्रसाधनों के विभिन्न रासायनिक संगठन के कारण बाजार में इनके तेल की कीमत अलग-अलग है।

विश्व बाजार में तुलसी की विभिन्न प्रजाति के तेलों की कीमत 2000 से 8000 किलो ग्राम है। तुलसी की *ओसिमम बेसीलीकम* प्रजाति को तेल उत्पादन के लिए उगाया जाता है। तुलसी की इस प्रजाति की भारत में बड़े पैमाने पर खेती होती है।

तुलसी में गजब की रोगनाशक शक्ति है। विशेषकर सर्दी, खांसी व बुखार में यह अचूक दवा का काम करती है। भारतीय आयुर्वेद के सबसे प्रमुख ग्रंथ *चरक संहिता* में कहा गया है कि तुलसी कड़वे व तीखे स्वाद वाली, हृदय के लिए लाभकारी, त्वचा रोगों में फायदेमंद, पाचन शक्ति बढ़ाने वाली और मूत्र से संबंधित रोगों को मिटाने वाली औषधि है। यह कफ और वात से संबंधित रोगों को भी ठीक करती है।

*विद्यावाचस्पति छात्र, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर; **विद्यावाचस्पति छात्र, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर; ***विद्यावाचस्पति छात्र, प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राजेंद्र नगर, हैदराबाद; ****विद्यावाचस्पति छात्र, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

कैसे करें खेती

जुलाई माह तुलसी के पौधे को खेत में लगाने का सबसे सही समय होता है। सामान्य पौधे 60 x 30 सेंटीमीटर की दूरी पर लगाने चाहिए। पौधों को लगाने के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी जरूरी है।

तुलसी की मुख्य प्रजातियां

तुलसी की मुख्यत: दो प्रजातियां अधिकांश घरों में लगाई जाती हैं। इन्हें रामा और श्यामा कहा जाता है।

- रामा के पत्तों का रंग हल्का होता है इसलिए इसे गौरी कहा जाता है।
- श्यामा तुलसी के पत्तों का रंग काला होता है। इसमें कफनाशक गुण होते हैं। यही कारण है कि इसे दवा के रूप में अधिक उपयोग में लाया जाता है।
- तुलसी की एक प्रजाति वन तुलसी भी होती है। इसमें जबरदस्त जहरनाशक प्रभाव पाया जाता है, लेकिन इसे घरों में बहुत कम लगाया जाता है। आंखों के रोग, कोढ़ और प्रसव में परेशानी जैसी समस्याओं में यह रामबाण दवा है।

तुलसी की पौध

मृदा व जलवायु

इसकी खेती कम उपजाऊ भूमि, जिसमें पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध हो, अच्छी होती है। बलुई दोमट भूमि इसके लिए बहुत उपयुक्त होती है। इसके लिए उष्णकटिबंधीय एवम् उपोष्ण कटिबंधीय दोनों तरह की जलवायु उपयुक्त होती हैं।

बुआई/रोपाई

इसकी खेती बीज द्वारा होती है लेकिन खेत में बीज की बुआई सीधे नहीं करनी चाहिए। पहले इसकी नर्सरी तैयार करनी चाहिए बाद में इसकी रोपाई करनी चाहिए।

पौध तैयार करना

भूमि की 15-20 सें.मी. गहरी खुदाई करके खरपतवार आदि निकालकर खेत को तैयार कर लेना चाहिए। 15 टन प्रति है. की दर से गोबर की सड़ी खाद अच्छी तरह मिला देनी चाहिए। 1x1मी. आकार की भूमि की सतह से उभरी हुई क्यारियां बनाकर 20 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा इतना ही पोटाश प्रति हैक्टर की दर से मिला देना चाहिए। 750ग्रा.-1 किलोग्राम बीज एक हैक्टर खेत के लिए पर्याप्त होता है। बीज की बुआई 1:10 के अनुपात में रेत या बालू मिलाकर 8-10 सें.मी. की दूरी पर पंक्तियों में करनी चाहिए। बीज की गहराई अधिक नहीं होनी चाहिए। जमाव के 15-20 दिनों बाद 20 कि. ग्रा./है. की दर से नाइट्रोजन डालना उपयोगी होता है। पांच-छह सप्ताह में पौध रोपाई हेतु तैयार हो जाती है।

रोपाई

सूखे के मौसम में रोपाई हमेशा दोपहर के बाद करनी चाहिए। रोपाई के बाद खेत की सिंचाई तुरन्त कर देनी चाहिए। बादल या हल्की वर्षा वाले दिन इसकी रोपाई के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं। इसकी रोपाई पंक्ति से पंक्ति 60 सें. मी. तथा पौधे से पौधे 30 सें. मी. की दूरी पर करनी चाहिए।

सिंचाई

अगर बरसात के दिनों में वर्षा होती रही तो सितम्बर तक इसके लिए सिंचाई की कोई आवश्यकता नही होती है। उसके बाद सिंचाई की जरूरत हो सकती है।

खरपतवार नियंत्रण

इसकी पहली निराई-गुड़ाई, रोपाई के एक माह बाद करनी चाहिए। दूसरी निराई-गुड़ाई, पहली निराई के 3-4 सप्ताह बाद करनी चाहिए। बड़े क्षेत्र में गुड़ाई ट्रैक्टर से की जा सकती है।

खाद एवं उर्वरक

इसके लिए 15 टन प्रति हैक्टर की दर से गोबर की खाद भूमि में डालनी चाहिए। इसके अलावां 75-80 कि. ग्रा, नाइट्रोजन 40-40 कि. ग्रा. फॉस्फोरस व पोटाश की आवश्यकता होती है। रोपाई से पहले एक तिहाई नाइट्रोजन तथा फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत में डालकर भूमि में मिला देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन की मात्रा दो बार में खड़ी फसल में डालनी चाहिए।

तुलसी बीज

कटाई

जब पौधे में पूरी तरह से फूल आ जाएं तथा नीचे के पत्ते पीले पड़ने लगें तो इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। रोपाई के 10-12 सप्ताह के बाद यह कटाई के लिए तैयार हो जाती है। रोपण के 90-95 दिनों के बाद, फसल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। पत्ती के उत्पादन के लिए फूलों के प्रारंभिक स्तर पर पत्तियों की तुड़ाई की जाती है। फसल को जमीनी स्तर पर इस तरीके से काटा जाता है कि शाखाओं को काटने के बाद तने फिर से उग आएं। जब पौधों की पत्तियां हरे रंग की होने लगें, तभी अच्छी धूप वाला दिन देखकर इनकी कटाई शुरू कर देनी चाहिए। सही समय पर कटाई जरूरी है, ऐसा न करने पर तेल की मात्रा पर इसका असर होगा। पौधे पर फूल आने के कारण भी तेल की मात्रा कम हो जाती है। जब पौधे पर फूल आना शुरू हो जाएं, तब इनकी कटाई शुरू कर देनी चाहिए। इसके अलावा जल्दी नई शाखाएं आ जाएं, इसलिए कटाई 15 से 20 सेंटीमीटर ऊंचाई से करनी चाहिए।

आसवन

तुलसी का तेल पूरे पौधे के आसवन से प्राप्त होता है। इसका आसवन, जल तथा वाष्प आसवन, दोनों विधि से किया जा सकता है। लेकिन वाष्प आसवन सबसे ज्यादा उपयुक्त होता है। कटाई के बाद 4-5 घंटे छोड़ देना चाहिए। इससे आसवन में सुविधा होती है।

पैदावार

इस फसल की औसत उपज 8 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा तेल की पैदावार 80-100 कि. ग्रा. हैक्टर तक होती है।

अनुमानित खर्चा व कमाई

खेत में 10 से 15 हजार की खाद लागत लगेगी। इसकी एक सीजन में 8 क्विंटल तक की पैदावार होती है। मंडी में 8 से 10 हजार रुपए प्रति क्विंटल के भाव तक तुलसी के बीज बिक जाते हैं। वहीं इससे प्राप्त सूखी पत्तियों को प्रतिष्ठित औषधीय कंपनियां 7000 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से खरीद लेती हैं। इसकी सूखी पत्तियों को सीधे मंडी में जाकर बेच सकते हैं या कॉन्ट्रेक्ट फॉर्मिंग करवाने वाली दवा कंपनियों या एजेंसियों के जरिए खेती का माल बेच सकते हैं।